ज्ञान का आलोक

अमेरिका और भारत के नागरिकों के बीच पारस्परिक सहयोग में हाल के वर्षों में उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है। दूसरे क्षेत्रों की तुलना में शिक्षा में यह बात ज्यादा स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। विदेश में विश्वविद्यालयीन शिक्षा और विशेष क्षेत्रों में विशेषज्ञता अर्जित करने के इच्छुक हजारों भारतीय छात्रों के लिए कई वर्षों से अमेरिका सर्वाधिक पसंदीदा केंद्र रहा है। यह सिलसिला उस दौर में भी बना रहा, जब दुनिया के इन दो सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों के बीच कूटनीतिक संबंधों में ठहराव था। पिछले कुछ अर्से से छात्रों की तादाद में जबरदस्त बढ़ोतरी हुई है।

भारतीय अर्थव्यवस्था के उदारीकरण और इसके परिणामस्वरूप 1990 के दशक में मध्यमवर्गीय परिवारों के जीवन स्तर में खासे सुधार के बाद अध्ययन के लिए अमेरिका जाने वाले भारतीय युवाओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस गलत अवधारणा के बावजूद कि 9/11 के बाद के दौर में अमेरिका अपने यहां विदेशी छात्रों के आगमन को लेकर उतना इच्छुक नहीं रहा है, भारत के बारे में आंकड़े कुछ और ही कहानी कहते हैं। अमेरिकी विश्वविद्यालय सांस्कृतिक विविधता और भारतीय छात्रों की बौद्धिक दक्षता के लिए उनका हमेशा स्वागत करते हैं।

अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसरों में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों की संख्या 1991-92 में 32,534 थी जो एक दशक बाद बढ़कर 54,664 हो गई। अप्रैल 2001-2002 में भारत ने लंबे अर्से से कायम चीन के रिकॉर्ड को तोड़ दिया और पहली बार अमेरिकी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले भारतीय छात्रों की संख्या पूरब में स्थित अपने इस बड़े पड़ोसी देश के छात्रों से अधिक थी। 2002-2003 में अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसरों में 74,603 भारतीय छात्र थे, जो अमेरिका में पढ़ाई कर रहे कुल 6,00,00 विदेशी छात्रों की संख्या का 12 फीसदी थे। अमेरिका में भारत विदेशी छात्रों का सबसे बड़ा स्रोत है, इस तथ्य के मद्देनजर भारत में अमेरिकी राजदूत डेविड मलफोर्ड ने कहा, ''मैं उन सभी भारतीय छात्रों के बारे में केवल सोचकर ही आशावादी हो जाता हूं, जो अमेरिकी विश्वविद्यालय परिसरों और शहरों में अध्ययन कर रहे हैं। भविष्य पर उनके संभावित असर की कल्पना कीजिए।''

यह समझना आसान है कि उच्च शिक्षा के लिए भारतीय छात्र अमेरिका के प्रति आकर्षित क्यों होते हैं। अमेरिका में 3,600 से ज्यादा मान्यताप्राप्त कॉलेज और विश्वविद्यालय हैं। इनमें से कुछ बहुत पुराने और सारी दुनिया में श्रेष्ठ हैं और करीब 2,500 में अंतरराष्ट्रीय छात्र नामांकित हैं। भारतीय छात्र अमेरिकी शिक्षा प्रणाली को उदार, बहुआयामी, उच्च-गुणवत्तायुक्त और अपने लिए मित्रवत पाते हैं। वे अमेरिकी समाज में मौजूद आजादी और खुलेपन का आनंद हासिल करते हैं और अमेरिका में पढ़ने और जीने के अनुभव को निजी और पेशेवर तौर पर समृद्ध करने वाला पाते हैं। 2002 में युनाइटेड स्टेट्स एजूकेशनल फाउंडेशन इन इंडिया (यूसेफी) की ओर से करवाए गए एक सर्वेक्षण के मुताबिक 99 फीसदी छात्रों ने महसूस किया कि अमेरिकी शैक्षणिक संस्थाओं के अकादमिक कार्यक्रमों की विविधता और उदारता, व्यावहारिक प्रशिक्षण तथा सीखने के लिए विविध संस्कृतियों का माहौल उन्हें सबसे ज्यादा प्रभावित करता है। भारतीय छात्रों ने महसूस किया कि प्रौद्योगिकी और शैक्षणिक तकनीक के मामले में अग्रणी होने के कारण अमेरिकी विश्वविद्यालय भविष्य में उनके कॅरिअर निर्माण में बखूबी सक्षम हैं।

द्विराष्ट्रीय शैक्षणिक विनिमय संगठन यूसेफी की स्थापना 1950 में दोनों देशों की सरकारों द्वारा की गई थी। इसने अमेरिकी

सेशू बद्रीनाथ

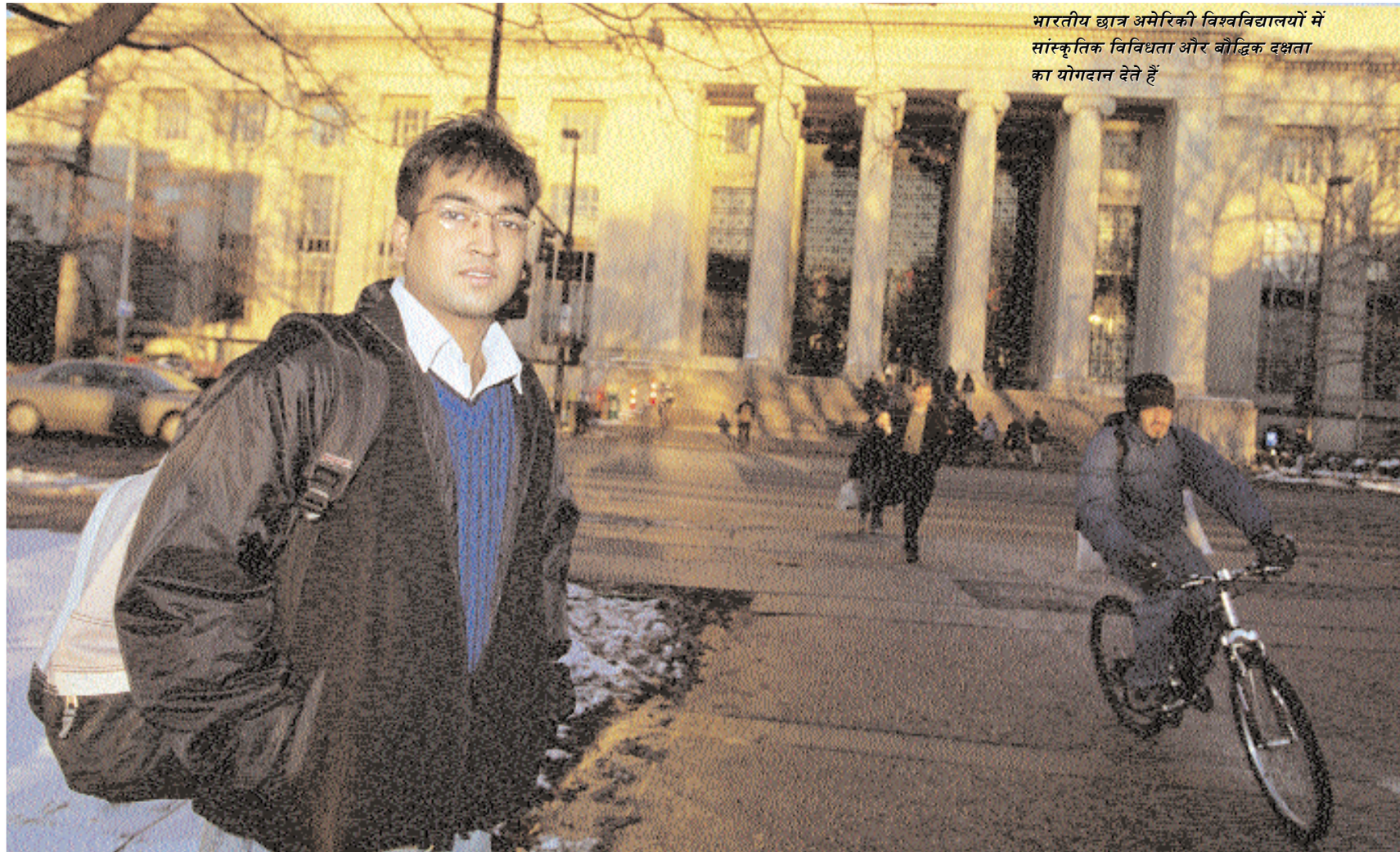

भारतीय छात्र अमेरिकी विश्वविद्यालयों में सांस्कृतिक विविधता और बौद्धिक दक्षता का योगदान देते हैं

भारत में अमेरिकी अध्ययन

बढ़ रही दिलचस्पी

भारत के बहुत से कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अमेरिकी अध्ययन, स्नातक और उससे नीचे के पाठ्यक्रमों का हिस्सा है

पिछले करीब 50 वर्ष से अमेरिका के बारे में अध्ययन का भारत में विशिष्ट स्थान रहा है। 1955 में इंडियन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ (आईएसआईएस) की स्थापना के साथ ही अमेरिका के बारे में अध्ययन उसके कार्यक्रम का हिस्सा बन गया। 1969 में आईएसआईएस स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ (एसआईएस) के नाम से यह जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय का हिस्सा बना। अमेरिकी अध्ययन विभाग में अब स्नातकोत्तर, एम.फिल. और पीएच.डी. स्तर के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। अमेरिकी साहित्य, इतिहास व राजनीति आज भारत के कई कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों का हिस्सा हैं। परस्पर-सांस्कृतिक और द्विपक्षीय उद्देश्यों वाले डॉक्टरेट स्तर के कई शोध प्रबंध हर साल आते हैं। कुछ प्रमुख विश्वविद्यालयों में सक्रिय अमेरिकी अध्ययन विभाग हैं।

यू.एस. एयूकेशनल फाउंडेशन इन इंडिया (यूसेफी) का भारत में अमेरिकी अध्ययन के विकास में बड़ा योगदान है। बहुत-से भारतीय संस्थानों में अमेरिकी फुलब्राइट प्रवक्ताओं का उत्साह अमेरिकी अध्ययन शुरू करने में सहायक रहा है। अमेरिकी दूतावास के पब्लिक अफेयर्स विभाग ने भी भारत में अमेरिकी अध्ययन कार्यक्रमों के विकास में बड़ी मदद दी है। अपने व्याख्याता कार्यक्रमों के तहत यह कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में गोष्ठियां और परिसंवाद करता है, विवि लाइब्रेरियों को पुस्तकें उपहार देता है व अमेरिकी अध्ययन से संबंधित शिक्षकों को अमेरिका के अमेरिकन स्टडीज़ समर इंस्टीट्यूट में भेजता है। यह इंडियन एसो. ऑफ अमेरिकन स्टडीज़, साउथ इंडिया अमेरिकन स्टडीज़ नेटवर्क, साउथ एशियन अमेरिकन स्टडीज़ एसो. व मल्टी-एथ्निक लिटरेचर्स जैसी संस्थाओं के साथ भी काम करता है। इसके अतिरिक्त अमेरिकी विदेश विभाग की अमेरिकी अध्ययन शाखा ने यूसेफी द्वारा संचालित भारत में अमेरिकी अध्ययनों पर गोष्ठियों के आयोजन में सहयोग किया है।

दुनिया के अन्य देशों की तरह अमेरिकी अध्ययन आज दोराहे पर है। वैश्वीकरण के दबाव और बहुसंस्कृतिवाद से भारत में अमेरिकी अध्ययन की प्रासंगिकता व भविष्य पर पुनर्विचार हो रहा है। शीत युद्ध के अंत, बढ़ते अंतरराष्ट्रीयतावाद व अमेरिकी अध्ययन में बहुविध नजरियों से संवाद की नई संभावनाएं खुली हैं। जहां भारतीय विवि पाठ्यक्रमों को नया रूप देने में लगे हैं, वहीं अध्यापकों और छात्रों में अमेरिकी समाज, संस्कृति व राजनीति के बारे में अधिकाधिक जानने की उत्सुकता बढ़ रही है।

विश्वविद्यालयों में गुणवत्तायुक्त शिक्षा हासिल करने के इच्छुक भारतीय युवाओं को उनका स्वप्न साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। यूसेफी भारतीय और अमेरिकी विद्वानों और छात्रों के लिए फुलब्राइट फेलोशिप का संचालन करता है। 1950 से अब तक 7,300 फुलब्राइट फेलोशिप दी जा चुकी हैं। फुलब्राइट कार्यक्रम के अलावा यूसेफी शैक्षणिक सलाहकार सेवाओं (ईएएस) का भी संचालन करता है। दिल्ली, चेन्नई, मुंबई और कोलकाता स्थित अपने चार कार्यालयों के अतिरिक्त अहमदाबाद, बंगलोर, हैदराबाद और मणिपाल स्थित चार सैटेलाइट केंद्रों के जरिए यूसेफी अमेरिका में उच्च शिक्षा संबंधी समग्र जानकारियां और नवीनतम सूचनाएं देता है। नई दिल्ली स्थित यूसेफी कार्यालय में शैक्षिक सलाहकार डॉ. विजया खंडाविली के मुताबिक, ईएएस में पिछले वर्ष 3,20,000 'संपर्क' दर्ज हुए. इस तथ्य से पता चलता है कि अमेरिका में उच्च शिक्षा हासिल करने के लिए भारतीय छात्रों ने यूसेफी के शैक्षणिक परामर्श सेवा केंद्रों से जानकारी और मार्गदर्शन हासिल करने के लिए कितनी बड़ी तादाद में संपर्क किया था।

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अमेरिका-भारत के बीच आपसी सहयोग कोई आज की बात नहीं है। 1951 में भारत सरकार ने मेसाच्युसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी की तर्ज पर बने सात भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों (आईआईटी) में से पहले संस्थान की पश्चिम बंगाल के खड़गपुर में स्थापना की थी। कोलकाता से 120 किलोमीटर की दूरी पर 1,800 एकड़ क्षेत्र में फैले इस संस्थान को अमेरिकी अतिथि शिक्षकों की सेवाओं तथा भारतीय शिक्षकों को प्रशिक्षण के लिए अमेरिका भेजने से भी लाभ हुआ।

आईआईटी की स्थापना के एक दशक बाद भारत सरकार ने गुजरात के अहमदाबाद में पहले भारतीय प्रबंध संस्थान (आईआईएम) की स्थापना की। अपनी स्थापना के आरंभिक वर्षों में इस संस्थान ने पाठ्यक्रम और शैक्षणिक पद्धतियों के लिए हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से बड़े पैमाने पर सहयोग अर्जित किया। यहां तक कि अहमदाबाद की आईआईएम इमारत के वास्तुशिल्प में अमेरिकी शैली की झलक मौजूद है। 60 एकड़ क्षेत्रफल में फैले इस परिसर का

यूसेफी

प्रतिभा का विकास

यूसेफी भारत और अमेरिका के श्रेष्ठ शिक्षाविदों के बीच शैक्षणिक विनिमय को प्रोत्साहन देता है

यू.एस. एजूकेशनल फाउंडेशन इन इंडिया (यूसेफी) की स्थापना 1950 में हुई जब प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और अमेरिकी राजदूत लॉय हेंडरसन ने शिक्षा के क्षेत्र में आपसी सहयोग के लिए एक द्विपक्षीय अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। फुलब्राइट कमीशन के नाम से भी मशहूर यूसेफी मेधावी छात्रों, पेशेवरों और विद्वानों के बीच शैक्षणिक विनिमय से अमेरिका और भारत के नागरिकों के बीच आपसी समझ विकसित करता है। यूसेफी अमेरिकी और भारतीय नागरिकों को फेलोशिप के जरिए अनुसंधान और अध्ययन को बढ़ावा व अमेरिका में अध्ययन के अवसरों के बारे में जानने के इच्छुक भारतीयों को परामर्श देता है, फुलब्राइट समुदाय को लेकर भारत में शैक्षणिक सेमिनारों का आयोजन तथा फुलब्राइट अध्येताओं और सहायकों के साथ विचार विनिमय करता है। यूसेफी भारतीय संस्थानों में व्याख्यान, अनुसंधान और परामर्श के लिए अमेरिकी विद्वानों की यात्राएं संयोजित करता है और आने-जाने वाले विद्वानों से संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए सेमिनार व गोष्ठियों का आयोजन करता है। दोनों देशों के प्रतिनिधियों से मिलकर बना निदेशक मंडल, जिसमें अमेरिकी राजदूत की ओर से पांच अमेरिकी और भारत सरकार की ओर से नामांकित पांच भारतीय सदस्य हैं, यूसेफी का संचालन करता है।

यूसेफी का सालाना बजट करीब 10.5 करोड़ रु. (23 लाख डॉलर) का है। अमेरिकी कांग्रेस की ओर से हर वर्ष प्रावधान किया जाने वाला कोष इसका सबसे बड़ा स्रोत है। अमेरिकी विदेश विभाग का सांस्कृतिक और शैक्षणिक ब्यूरो एक स्वतंत्र स्कॉलरशिप बोर्ड के माध्यम से फुलब्राइट कार्यक्रम प्रायोजित करता है। 1950 में अपनी स्थापना के बाद से यूसेफी अमेरिकी और भारतीय छात्रों, पेशेवरों और विद्वानों को 15,300 फुलब्राइट और अन्य प्रकार के अनुदान प्रदान कर चुका है या उनका प्रबंधन कर चुका है। 'फुलब्राइटर्स' को एक-दूसरे के देश में अध्ययन, पढ़ाने, विचार-विनिमय और समस्याओं के साझा समाधान का अवसर मिलता है। यूसेफी के पूर्व स्नातकों ने समूचे भारत में 16 एसोसिएशन स्थापित किए हैं। यूसेफी दोनों देशों में कई संस्थाओं से सहयोग करता है जैसे भारत में फोर्ड फाउंडेशन की फेलोशिप तथा चिकित्सा और वांडरबिल्ट यूनिवर्सिटी के विधि संकाय में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के लिए फेलोशिप का संचालन करता है। मणिपाल एकेडमी, टाटा ट्रस्ट और नेशनल काउंसिल फॉर एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च के साथ फुलब्राइट फेलोशिप की लागत में भागीदारी करता है और अमेरिकी सरकार से अनुदान प्राप्त हर्बर्ट एच. हम्फ्री फेलोशिप का भी संचालन करता है, जो जनसेवा के लिए प्रतिबद्ध मध्यम स्तर के सुयोग्य पेशेवरों के लिए है। यूसेफी होनोलूलू के ईस्ट-वेस्ट सेंटर के कार्यक्रमों हेतु भारत से भर्ती करने में भी मदद देता है।

संदीप बिस्वास/साभार: यूनीसेफ

भारतीय फुलब्राइट स्कॉलर यूसेफी की कार्यकारी निदेशक जेन ई. शुकोस्के (बैठी हुई, दाएं से तीसरी) के साथ

इंडियन बिजनेस स्कूल (आईएसबी)

लाभ का समीकरण

हैदराबाद स्थित इंडियन बिजनेस स्कूल अमेरिकी शैक्षणिक संस्थाओं और भारत के निजी क्षेत्र के बीच निरंतर बढ़ते आपसी सहयोग का परिचायक है

द इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) की स्थापना हैदराबाद में 1997 में हुई थी। इसका उद्देश्य था, ''अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान आधारित स्वतंत्र प्रबंधन संस्थान की रचना करना जो भारत और विश्व के लिए भविष्य के नायक विकसित करेगा।'' यह दुनिया के अग्रणी प्रतिष्ठानों के आपसी सहयोग का अनूठा उदाहरण है, जैसे यूनिवर्सिटी ऑफ पेन्सिल्वेनिया का व्हार्टन स्कूल, इलिनाइस की नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी का केलॉग ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मैनेजमेंट तथा लंदन स्कूल ऑफ बिजनेस। केलॉग, व्हार्टन और आईएसबी के बीच हस्ताक्षरित आशय पत्र के तहत पाठ्यक्रम, प्रवेश, फैकल्टी की नियुक्ति और विशेज्ञता तथा संसाधनों की भागीदारी होगी। आईएसबी की ओर से जारी किए जाने वाले प्रमाणपत्रों पर तीनों संस्थानों के डीन के हस्ताक्षर होंगे। केलॉग व व्हार्टन ने पाठ्यक्रम तथा पाठ्य-सामग्री तैयार करने में मदद देकर वैश्विक प्रबंधन तकनीकों व विचारों के सर्वोत्तम अंश आईएसबी के अकादमिक दायरे में डाले हैं। सबसे अहम यह है कि केलॉग और व्हार्टन के अलावा अन्य अग्रणी संस्थानों के फैकल्टी और शोधकर्ता आईएसबी में सेवाएं देने के लिए आते हैं और साथ ही वे स्कूल के शोध कार्य में भी भाग लेते हैं.

आईएसबी के संचालक मंडल में भारत और दुनिया की विख्यात कंपनियां हैं। इनमें रिलायंस इंडस्ट्रीज़, बजाज ऑटो, महिंद्रा एंड महिंद्रा, गोदरेज समूह, डायमलर क्रिसलर, मैकिन्से एंड कंपनी, मोर्गन स्टेनले, गोल्डमेन सेश, रॉयल डच पेट्रोलियम, फिलिप्स और जनरल इलेक्ट्रिक शामिल हैं। आईएसबी की आर्थिक जरूरतों की पूर्ति पूरी तरह निजी कंपनियां, न्यास और प्रतिष्ठित लोग करते हैं। स्कूल में छात्रों के लिए आवासीय सुविधा के साथ पूर्णकालिक स्नातकोत्तर प्रबंध कार्यक्रम चलता है। हर वर्ष स्कूल में बिल्कुल भिन्न प्रकार की पृष्ठभूमि व विविध अनुभव वाले 220 छात्र प्रवेश लेते हैं। आईएसबी के औसत छात्र करीब पांच वर्ष का कार्यानुभव लेते हैं। इसलिए केलॉग स्कूल के पूर्व डीन डोनाल्ड पी. जैकब्स कहते हैं, ''आईएसबी के स्तर का कोई दूसरा स्तरीय बिजनेस स्कूल हम देख पाएं, इसकी संभावना कम ही है।''

आईएसबी के छात्र हैदराबाद स्थित अपने कैंपस में

बी.के. रमेश

डिजाइन अमेरिकी वास्तुविद् लुई कान ने तैयार किया है जिनकी गणना बीसवीं सदी के अग्रणी वास्तुविदों में की जाती है।

2003 में स्थापित एक स्वतंत्र कार्यबल, जो काउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशंस और एशिया सोसायटी की ओर से सह-प्रायोजित है, ने भारतीय संस्थाओं के साथ परस्पर सहयोग के कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए अमेरिकी शैक्षणिक संस्थाओं को प्रोत्साहित किया। इस कार्यबल की रिपोर्ट में कहा गया, ''अमेरिकी शैक्षणिक कार्यक्रम का भारत में 1950 और 1960 के दशकों में बड़े पैमाने पर विस्तार और विकास हुआ, लेकिन अगले तीन दशकों में इसमें तेजी से गिरावट आई। अंशत: यह इस नजरिए को प्रतिबिंबित करता है कि अमेरिका के राजनैतिक और आर्थिक हितों के कारण भारत हाशिए पर चला गया था। विदेशी विद्वानों पर भारत के प्रतिबंध लगाए जाने से भी परस्पर शैक्षणिक सहयोग के प्रति दिलचस्पी कम हुई और भारत संबंधी कार्यक्रमों तथा पाठ्यक्रमों की संख्या घट गई। पिछले कुछ वर्षों में भारत के बारे में अध्ययन हेतु नए सिरे से दिलचस्पी जगी है। इसका एक कारण तो युवा भारतीय अमेरिकियों में अपनी विरासत के प्रति अधिक जानकारियां हासिल करने की इच्छा हो सकती है। इसके अलावा एक धारणा यह रही कि भारत को नजरअंदाज किया जा रहा था और शिक्षा के मामले में इस पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। इसलिए पिछले दो वर्षों में जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी के ईलियट स्कूल ऑफ इंटरनेशनल अफेयर्स और जॉन हॉपकिंस यूनिवर्सिटी के नीत्शे स्कूल ऑफ एडवांस्ड इंटरनेशनल स्टडीज़ ने अपने दक्षिण एशिया कार्यक्रम का विस्तार किया है और यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया ने अपने सेंटर फॉर एडवांस्ड स्टडी ऑफ इंडिया के विस्तार के लिए सफलतापूर्वक बड़ा कोष एकत्रित किया है। ऐसे कार्यक्रमों के अलावा देश भर के विभिन्न परिसरों में सहयोग से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों में भारतीय मूल के अमेरिकियों का बड़ा योगदान रहा है। वाशिंगटन तथा अन्य क्षेत्रों के

ईस्ट-वेस्ट सेंटर

सहयोग की मिसाल

सेंटर अमेरिका, प्रशांत और एशियाई देशों के बीच आपसी समझ विकसित करने में सहयोग देता है

कई अमेरिकी शैक्षणिक संस्थान भारत के साथ संवाद करते हैं। इनमें सबसे मशहूर है हवाई राज्य की राजधानी होनोलूलू का ईस्ट-वेस्ट सेंटर (ईडब्लूसी). शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में दुनिया भर में मशहूर ईडब्लूसी की स्थापना 1960 में अमेरिकी कांग्रेस ने की थी। इसका उद्देश्य था एशिया, प्रशांत और अमेरिकी देशों के बीच रिश्तों और समझ को सुदृढ़ बनाना। यह सेंटर साझा अध्ययन, प्रशिक्षण, संवाद और अनुसंधान को बढ़ावा देता है।

■ 1960 से अब तक 1,900 से ज्यादा भारतीय पेशेवर, अनुसंधानकर्ता और छात्र ईडब्लूसी प्रोग्राम में भाग ले चुके हैं। ईडब्लूसी के पूर्व स्नातकों के समूह दिल्ली, मुंबई और चेन्नई में मौजूद हैं। नई दिल्ली में पिछले दिनों आयोजित स्नातकों के सम्मेलन में ईडब्लूसी अध्यक्ष चार्ल्स मॉरिसन और भारत में अमेरिकी राजदूत डेविड मलफोर्ड ने भाग लिया।

■ कई भारतीय छात्रों ने यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई से डिग्री हासिल की और ईडब्लूसी स्कॉलरशिप के तहत शोध किया।

■ भारतीयों ने हाल ही में ईडब्लूसी के कार्यक्रमों जैसे

संदीप बिस्वास/साभार: यूनीसेफ

ईडब्लूसी फेलोशिप के तहत भारत आए अमेरिकी पत्रकार

पत्रकारिता के लिए जेफरसन फेलोशिप, युवा नेतृत्व के लिए न्यू जनरेशन सेमिनार और सुरक्षा अधिकारियों व विदेशी मामलों के लिए सीनियर पॉलिसी सेमिनार में भाग लिया।

■ सीआईआई के सह-प्रायोजन में नई दिल्ली में 2004 के शुरू में हुई ईडब्लूसी की एशिया प्रशांत कार्यकारिणी की सालाना गोष्ठी में कई एक्जिक्यूटिव, नीति-निर्माताओं व ईडब्लूसी विशेषज्ञों ने ''वैश्विक और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में भारत'' विषय पर चर्चा की।

■ भारतीय उद्योगपति रतन एन.टाटा 'ईडब्लूसी एशिया पैसिफिक कम्युनिटी बिल्डिंग एवार्ड' पाने वाले पहले व्यक्ति थे। उन्होंने ईडब्लूसी पर नियंत्रण रखने वाले 18 सदस्यीय बोर्ड में सेवा की है। यह पुरस्कार उन्हें उनके ''विजन, पेशेवर व व्यक्तिगत उपलब्धियों'' के लिए दिया गया था, जो सेंटर के लक्ष्य का एक उदाहरण है।

शिक्षाविदों के लिए प्रकाशपुंज

अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़ ने उभरते विद्वानों की कई पीढ़ियों के विकास में योगदान दिया है. साथ ही अमेरिका में भारत संबंधी अध्ययन-मनन के अग्रणी समर्थक के रूप में इसकी पहचान भी बनाई है

अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़ (एआईआईएस) को भारत संबंधी अमेरिकी ज्ञान को मूर्त रूप देने के लिए पहचाना जाता है। यह अमेरिका में विश्वविद्यालयों का संघ है, जहां विद्वान भारत के बारे में शिक्षा और अनुसंधान में सक्रिय रूप से भागीदारी करते हैं। इसकी स्थापना 1961 में अमेरिका में भारतीय अध्ययन कार्यक्रमों में संलग्न अमेरिकी विद्वानों ने की। इसका भारतीय मुख्यालय गुड़गांव में है। करीब चालीस वर्षों से यह केंद्र वरिष्ठ अमेरिकी विद्वानों और पीएचडी कर रहे छात्रों को फेलोशिप के जरिए सहयोग दे रहा है। यह अपने उम्दा भाषा केंद्रों से भारतीय भाषाओं का प्रशिक्षण देता है। इसने अपने दो शोध केंद्रों से भारतीय संस्कृति के बारे में ज्ञान का प्रसार भी किया है।

3,500 से ज्यादा छात्रों को एआईआईएस का सहयोग मिला है। उनका अध्ययन मानव विज्ञान से लेकर जीव-विज्ञान जैसे कई क्षेत्रों पर केंद्रित रहा है। उनके कार्यों का प्रभाव सैकड़ों पुस्तकों व हजारों लेखों पर पड़ा, जो भारत के बारे में अमेरिका की जानकारी का आधार बना। एआईआईएस के प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रायोजित शोध से निकलीं करीब 2,700 पुस्तकें कोलकाता की नेशनल लाइब्रेरी, दिल्ली के नेहरु स्मृति संग्रहालय और लाइब्रेरी व चेन्नई की अड्यार लाइब्रेरी समेत भारत के पुस्तकालयों को दी गईं। इनमें बड़े पैमाने पर पढ़ी जाने वाली *इंडिया एंड अमेरिका* भी है, जिसका प्रकाशन इंस्टीट्यूट ने किया है। एआईआईएस के पास भारत की पुरातात्विक विरासत की तस्वीरों और स्लाइड्स के अलावा भारतीय संगीत की रिकॉर्डिंग्स व पारंपरिक रीति-रिवाजों की फिल्में भी हैं।

एआईआईएस विद्वानों ने अपने भारतीय और अन्य देशों के सहयोगियों के संग कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया। नतीजतन कई ऐसे चुनिंदा शोधपत्र छपे जो विभिन्न क्षेत्रों के लिए ज्ञान का प्रमुख स्रोत हैं। अपने शोध और पत्र तैयार करने के कार्यक्रमों के माध्यम से एआईआईएस ने भारतीय संस्कृति, नीति-नियंता और अनुसंधान केंद्र भी दक्षिण एशिया के प्रति काफी गंभीरता के साथ अपनी दिलचस्पी प्रदर्शित कर रहे हैं। 1990 के दशक में कुछ ही के पास दक्षिण एशिया से संबंधित विशेषज्ञ थे और उनका समूचा ध्यान परमाणु अप्रसार और भारत-पाकिस्तान के बीच संघर्ष छिड़ने की आशंका पर ही केंद्रित था। आज आधे से अधिक केंद्रों के पास भारत और दक्षिण एशिया के लिए कार्यक्रम हैं जो राजनैतिक, आर्थिक मामलों की विस्तृत श्रृंखला के साथ ही रणनीति और विभिन्न मुद्दों से संबंधित हैं। शायद ही कोई सप्ताह वाशिंगटन के विचारक वर्गों या लोक अभिरुचि के विभिन्न दक्षिण एशियाई कार्यक्रमों के बिना गुजरता है। यहां भी आर्थिक सहयोग के मामले में भारतीय अमेरिकियों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है।

एक दशक पहले भारत में उच्च शिक्षा के संचालन और वित्त पोषण का दायित्व मुख्य रूप से सरकार का ही होता था। हालांकि भारत में आज भी उच्च शिक्षा प्रदान करने में सरकार की भूमिका अहम है, लेकिन अब निजी क्षेत्र भी महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में नया रुझान देखा गया है—अमेरिकी संस्थाएं अमेरिका-भारत संस्थागत संयोजन कार्यक्रम के अंतर्गत शैक्षणिक कार्यक्रमों का संचालन कर रही हैं। यह उन भारतीय छात्रों के लिए आकर्षक विकल्प है, जो कम खर्च में अमेरिकी डिग्री हासिल करना चाहते हैं।

एक और नया रुझान है—भारत में विदेशी कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के समुद्रपारीय परिसरों का खुलना और भारतीय तथा अमेरिकी विश्वविद्यालयों के बीच 'ट्विनिंग' (युग्म) समझौता। एक ट्विनिंग कोर्स के अंतर्गत छात्र अपने स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम के पहले दो वर्ष भारत में और शेष दो वर्ष अमेरिकी विश्वविद्यालय के परिसर में गुजारता है।

दरअसल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इस समय वैश्विक क्रांति चल रही है। एक ऐसी क्रांति जिसमें भारतीयों की भागीदारी और उनके योगदान को कम करके नहीं आंका जा सकता। भारतीय विश्वविद्यालयों में अमेरिकी छात्रों का बहुत कम संख्या में मौजूद होना इस समूचे परिदृश्य में एक अखरने वाली बात है। दिसंबर 2002 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्वर्णजयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने विदेशों में भारतीय शिक्षा संस्थाओं को प्रोत्साहन देने के लिए आवश्यक कदम उठाने को कहा था, ताकि विदेशी छात्रों का भारत में प्रवाह शुरू हो सके, जो इस समय पूरी तरह अमेरिका के पक्ष में है। लेकिन किसी भी पैमाने से नापने पर पता चलता है कि इसमें अभी काफी समय लगेगा। गौरतलब है कि अमेरिकी विश्वविद्यालयों में पिछले वर्ष करीब 75,000 छात्र पंजीकृत हुए जबकि इसी अवधि में 300 से भी कम अमेरिकी छात्रों ने भारतीय विश्वविद्यालयों में प्रवेश लिया था। इसका एक कारण है—पाठ्यक्रमों की सीमित संख्या। इंस्टीट्यूट ऑफ इंटरनेशनल एजूकेशन हर वर्ष विदेश में शिक्षा हासिल करने के इच्छुक अमेरिकी छात्रों के लिए विदेशी शिक्षा कार्यक्रमों की सूची जारी करता है। मौजूदा निर्देशिका के मुताबिक अमेरिकी छात्रों के लिए भारत में केवल 34 कार्यक्रम हैं जबकि फ्रांस के लिए यह संख्या 483 है।

बाधाओं के बावजूद अमेरिका और भारत के बीच शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग तेजी से बढ़ रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में बेहतर द्विपक्षीय संबंधों से दोनों देशों के नागरिकों के बीच आपसी सामंजस्य में बढ़ोतरी के साथ-साथ युवा पीढ़ी के लिए अनमोल अनुभव के खजाने का रास्ता खुलता है और इससे उज्ज्वल भविष्य के लिए संबंधों की नींव और ज्यादा मजबूत होती है।

यशवंत नेगी/इंडिया टुडे

गुड़गांव स्थित अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज़

इतिहास, भाषा और वर्तमान समय के बदलाव के बारे में एकदम सही और खोजपरक ज्ञान अर्जित करने का प्रयास किया है। अपने खुद के तथा अपने विद्वानों के प्रकाशनों से इंस्टीट्यूट शोध के नतीजे अमेरिका, भारत तथा दुनिया भर के लिए आसानी से उपलब्ध कराना चाहता है। इसका असर पहले से ही काफी हुआ है। संस्थान ने शोधार्थियों की नई पीढ़ियों को बढ़ावा दिया है और इसके वरिष्ठ विद्वान अमेरिकी कॉलेजों के हजारों नए छात्रों को शिक्षा देने क्लासरूमों में लौटे हैं।

अपने पांच अध्यक्षों की अगुआई में इंस्टीट्यूट फला-फूला और आज इसे अमेरिका में भारत संबंधी अध्ययन का प्रमुख केंद्र माना जाता है। इसके संचालन के लिए विभिन्न स्रोतों से राशि प्राप्त होती है। फंड देने वाले निजी फाउंडेशनों में फोर्ड, मेलॉन, ओल्ड डॉमिनियन, कारनेगी, रॉकफेलर फाउंडेशन और जे.डी.आर. थर्ड फंड प्रमुख हैं। इंस्टीट्यूट को आरंभिक फंड की पूर्ति स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन, अमेरिकी विदेश विभाग, काउंसिल ऑफ अमेरिकन ओवरसीज़ रिसर्च सेंटर्स, नेशनल साइंस फाउंडेशन, नेशनल एंडाउमेंट फॉर ह्यूमैनिटीज़ और अमेरिकी शिक्षा विभाग की ओर से की जाती है।

पढ़ाई के लिए अमेरिका जाने वाले भारतीय छात्रों की बढ़ती संख्या

अमेरिका में अध्ययन करने वाले भारतीय छात्रों की संख्या हाल के वर्षों में लगातार बढ़ी है

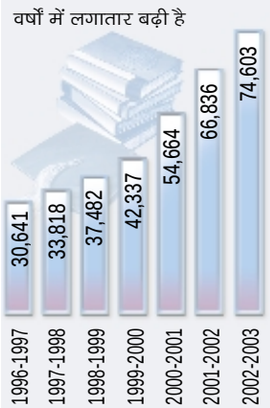

स्रोतः आईआईई